कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।

ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

आज हम उस एकमात्र मामले या एकमात्र विधि (Only Observance) का अध्ययन करेंगे जिसे हमारे प्रभु ने अपने चेलों से उनके स्मरण में करने के लिए कहा था!

जी हाँ! अंतिम भोज!

इसके बारे में हम

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 11 :23-26 "क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची, और मैं ने तुम्हें भी पहुंचा दी; कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया रोटी ली। और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा; कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। इसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया, और कहा; यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है: जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो। क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो"।

वचनों में पढ़ते हैं -

यह विधि बाइबल के छात्रों में "प्रभु के स्मरण का दिन" (प्रभु का मेमोरियल) के रूप में जानी जाती है।

यह "ऊपरी कमरे या बड़ी अटारी में" प्रभु के

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

"अंतिम भोज" के उस अवसर का स्मरणोत्सव है जब प्रभु ने कलीसिया (Church) या मसीह की देह के इस परमपावन विधि की स्थापना की और इसका पालन करने की आज्ञा दी!!

यह पूरी तरह से किसका प्रतीकत्व करता है?

इसका पालन कैसे और कब करना है ?

इस मेमोरियल या स्मरण के दिन का पालन करने की अपेक्षा किनसे की जाती है या इसका पालन करने की अनुमति किसे है ?

इन सभी प्रश्नों के उत्तरों को हम आज के पाठ में देखेंगे!

आइये हम वचन को पवित्रशास्त्र में देखते हुए इस पढाई को आरम्भ करें-

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 5:7 “पुराना खमीर निकाल कर, अपने आप को शुद्ध करो: कि नया गूंधा हुआ आटा बन जाओ; ताकि तुम अखमीरी हो, क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है”।

इसका मतलब क्या है?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

मसीह हमारा "फसह" कैसे हैं ?

आइये हम याद रखें की "भोज" जिसे प्रभु यहाँ पर मना रहे थे वह

यहूदियों के फसह का पालन था।

और उस फसह में उन्हें एक बलिदान किये हुए "मेमने" को खाना होता था!!

तो अब सवाल यह उठता है कि मसीह

"हमारा फसह" कैसे हो सकते हैं?

इसका उत्तर समझने के लिए हमें अवश्य अब यह देखना चाहिए कि पुराने नियम में "फसह" का क्या मतलब था?

आइये हम

निर्गमन (Exodus) 12:1-11 "फिर यहोवा ने मिस्र देश में मूसा और हारून से कहा, कि यह महीना तुम लोगों के लिये आरम्भ का ठहरे; अर्थात वर्ष का पहिला महीना यही ठहरे। इस्राएल की सारी मण्डली से इस प्रकार कहो, कि इसी महीने के दसवें दिन को तुम अपने अपने पितरों के घरानों के अनुसार, घराने पीछे एक एक मेम्ना ले रखो। और यदि किसी के घराने में एक मेम्ने के खाने के लिये मनुष्य कम हों, तो वह अपने सब से निकट रहने वाले पड़ोसी के साथ प्राणियों की गिनती के अनुसार एक मेम्ना ले रखे; और तुम हर एक के खाने के अनुसार मेम्ने का हिसाब करना। तुम्हारा मेम्ना निर्दोष और पहिले वर्ष का नर हो, और उसे चाहे भेड़ों में से लेना चाहे बकरियों में से। और इस महीने के चौदहवें दिन तक उसे रख छोड़ना, और उस दिन गोधूलि के समय इस्राएल की सारी मण्डली के लोग उसे बलि करें। तब वे उसके लोहू में से कुछ ले कर जिन घरों में मेम्ने को खाएंगे उनके द्वार के दोनों अलंगोंऔर चौखट के सिरे पर लगाएं। और वे उसके मांस को उसी रात आग में भूंजकर अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात के साथ खाएं। उसको सिर, पैर, और अतडिय़ों समेत आग में भूंजकर खाना, कच्चा वा जल में कुछ भी पकाकर न खाना। और उस में से कुछ बिहान तक न रहने देना, और यदि कुछ बिहान तक रह भी जाए, तो उसे आग में जला देना। और उसके खाने की यह विधि है; कि कमर बान्धे, पांव में जूती पहिने, और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना; वह तो यहोवा का पर्ब्ब होगा।"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

वचनों की ओर पलटें -

"फसह" एक विधि या व्यवस्था थी -

☞ सबसे पहले दी गई व्यवस्था जिसे परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएल को पालन करने के लिए दिया था।

आइये अब हम इसके पुरे विवरण के साथ यह देखें की यह "फसह" क्या था।

यहाँ कुछ विवरण हैं –

➡ यह परमेश्वर के द्वारा इस्राएल को दी गई प्रथम व्यवस्था थी।

निर्गमन (Exodus)12:43 “फिर यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, पर्ब्ब की विधि यह है; कि कोई परदेशी उस में से न खाए”

➡ इस फसह का पालन इस्राएली वर्ष के प्रथम महीने जिसे “अबीब” कहा जाता है किया जाता था।

निर्गमन (Exodus) 13:4 “आबीब के महीने में आज के दिन तुम निकले हो”।

आज के समय में इस महीने को इस्राएल में “निसान” के महीने के नाम से भी जाना जाता है

➡ एक मेमने को दसवें (10) दिन लेना होता था और चौदहवें(14) दिन तक रखना होता था ।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

➡ इसके बाद इस मेमने को अवश्य शाम में या गोधूलि के समय में बलि करना होता था।

➡ उसके लहू में से कुछ लेकर द्वार के दोनों अलंगों और चौखट के सिरे पर लगाना होता था।

➡ उसके मांस को उसी रात आग में भुंजकर खाना होता था।
कच्चा या जल में पकाकर कुछ भी कभी भी नहीं खाना था।

➡ इस आग में भूँजे हुए मांस को

☞ अखमीरी रोटी और कड़वे साग-पात के साथ खाना होता था।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

उसमें से कुछ भी सबेरे तक नहीं रहने देना था।

यदि सबेरे तक कुछ रह भी जाये तो उसे आग में जला देना था सबेरे होने से पहले।

वे जो उसमें भाग ले रहे थे और खा रहे थे उनको पूरे वस्त्र पहनकर, पैरों में जूती पहनकर और हाथ में लाठी लेकर रहना था

जैसे कि वे किसी यात्रा में जा रहे हों।

अंततः इसे उन्हें फुर्ती से खाना था क्योंकि "यह यहोवा का पर्व था"।

यह सब क्या संकेत करता है या इन सब का महत्त्व क्या है ?

यह एक व्यवस्था (LAW) थी, परमेश्वर के द्वारा इस्राएल को दी गयी पहली व्यवस्था!
और हम व्यवस्था के बारे में नए नियम में क्या पढ़ते हैं?
आइये हम
इब्रानियों (Hebrews) 10:1 "क्योंकि व्यवस्था जिसमें आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उन का असली स्वरूप नहीं, इसलिये उन एक ही प्रकार के बलिदानों के

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं।"

वचन में पढ़ें -

जी हाँ! व्यवस्था एक "प्रतिबिम्ब" (SHADOW) या "छाया" (TYPE) है!
और इसी मामले को हम फिर से

कुलुस्सियों (Colossians) 2:16, 17 "इसलिये खाने पीने या पर्व या नए चान्द, या सब्तों के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे। क्योंकि ये सब आने वाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएं मसीह की हैं।"

वचनों में पढ़ते हैं -

जी हाँ! व्यवस्था मसीह की कई बातों की छाया (TYPIFIES) है या उसे चिन्ह से प्रगट (TYPIFIES) करती है!

व्यवस्था ने "प्रतिबिम्ब" में जो दिखाया उसकी

पूरी पूर्ती मसीह में और मसीह के द्वारा होती है!

जी हाँ! व्यवस्था ने "छाया" (TYPE) में केवल वही दिखाया जो असलियत (REALITY) और प्रतिरूप (ANTITYPE) में मसीह के द्वारा परमेश्वर की दिव्य योजना को पूरा करने में प्रगट होगा।

तो फसह में मसीह की छाया (Typify of Christ) <u>क्या</u> है या फसह में कौन सा चिन्ह मसीह को प्रगट करता है?

["मेमना"]

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

मेमना को हमारे प्रभु यीशु मसीह की एक छाया या चिन्ह होना था, जो कलीसिया के शिरोमणि (HEAD) हैं, जो कि उनकी देह है!

इस प्रकार हम स्पष्ट रूप से देखते और

1 कुरिन्थियों (Corinthians) 5:7 "... क्योंकि हमारा भी फसह जो मसीह है, बलिदान हुआ है।"

वचन में पढ़ते हैं -

जी हाँ! फसह का मेमना यीशु को दर्शाता है - "परमेश्वर का मेमना"

यूहन्ना (John) 1:36 "और उस ने यीशु पर जो जा रहा था दृष्टि करके कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है।"

वचन में पढ़ते हैं)!

[☞ मेमने को दसवें दिन से चौदहवें दिन तक रखा गया]

यह इस्राएल के "घराने" में हमारे प्रभु की सेवा की अवधि को दर्शाता है।

जी हाँ ! यह 3 - 1 / 2 वर्षों की अवधि थी जैसा कि हम

दानिय्येल (Daniel) 9:27 "और वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बान्धेगा, परन्तु आधे सप्ताह के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा; ..." वचन में पढ़ते हैं -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

हम जानते हैं कि यह वचन पवित्रशास्त्र में एकमात्र वचन है जो हमें यह बताता है कि

हमारे प्रभु की सेवा कितनी लम्बी थी!

(इस वचन का विस्तृत अध्ययन पाठ # 28 "सत्तर हफ़्तों की भविष्यद्वाणी" में पाया जाता है।)

और इसी प्रकार यहाँ भी "मेमने" को 4 दिनों तक रखा गया और चौथे दिन बलि दी गयी।

["गोधूलि" के समय में चौदहवें दिन मेमने की बलि दी गयी।]

यह चौथे वर्ष के

"आधे ही में" ,

यहाँ तक कि "नौवें घंटे" या तीसरे पहर में हमारे प्रभु की मृत्यु को दर्शाता है जैसा कि हम

मत्ती (Matthew) 27:46-50 "तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, एली, एली, लमा शबक्तनी अर्थात हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? जो वहां खड़े थे, उन में से कितनों ने यह सुनकर कहा, वह तो एलिय्याह को पुकारता है। उन में से एक तुरन्त दौड़ा, और स्पंज लेकर सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया। औरों ने कहा, रह जाओ, देखें, एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं। तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिए।"

वचनों में पढ़ते हैं -

जी हाँ ! यहूदियों के लिये इस तीसरे पहर या नवें घंटे की गणना सुबह छह बजे से शुरू होती है और इस प्रकार यह दोपहर के तीन बजे समय का होगा।

(ध्यान दें - कि अंग्रेजी बाइबल में इस वचन में तीसरे पहर के लिये 'नौंवा घंटा (9th hour)' का उपयोग किया गया है।)

["... लहू में से कुछ लेकर द्वार के दोनों अलंगों और चौखट के सिरे पर लगाएं"]

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

यह प्रभु की योग्यता को “ह्रदय” के “द्वार” पर लगाने (IMPUTATION OF THE LORD’S MERIT) का प्रतीक था क्योंकि हम

प्रकाशितवाक्य (Revelation) 3:20 “देख, मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुन कर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आ कर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।”

वचन में देखते हैं कि द्वार ह्रदय का प्रतीक है-

इस प्रकार आत्मिक इस्राएली यानि

➡ "विश्वास का घराना"

अपने ह्रदय पर "यीशु के लहू" के आवरण को पाते हैं या इनका ह्रदय यीशु के लहू से ढका जाता है।

जी हाँ! यह पाप से हमारे ह्रदय को साफ़ करने के लिये किये गए "छिड़काव" को दर्शाता है; जैसा कि हम

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इब्रानियों (Hebrews) 10:22 "तो आओ; हम सच्चे मन, और पूरे विश्वास के साथ, और विवेक को दोष दूर करने के लिये हृदय पर छिड़काव लेकर, और देह को शुद्ध जल से धुलवा कर परमेश्वर के समीप जाएं।" वचन में पढ़ते हैं -

यह धर्मी ठहरने का और पापों की क्षमा का जो यीशु के बहाये हुए लहू के द्वारा या क्रूस पर उनकी छुड़ौती के बलिदान के मूल्य से मिलती है, उस का एक सुन्दर चित्र है।

["...उसी रात"]

यह रात के उस भाग को दर्शाता है जिसके बारे में पवित्रशास्त्र में वचन बताता है कि - भजन संहिता (Psalms) 30:5 "...कदाचित् रात को रोना पड़े, परन्तु सबेरे आनन्द पहुंचेगा॥"

यह राज्य की "सुबह" आने से पहले की रात का हिस्सा है।
यह प्रभु की मृत्यु के बाद के समय की अवधि है - इस अवधि को सुसमाचार का युग कहा जाता है।

["... आग में भुंजकर"]

प्रिय उद्धारकर्ता ने

"अपनी देह में"

रहने के दिनों में जिन दुखों, क्लेशों और परखने वाले अनुभवों का सामना किया उन सभी के कुल योग को दर्शाने के लिए इस प्रतीक या चिन्ह का उपयोग किया गया था।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

फिर हम इस भूँजे हुए मांस के बारे में पढ़ते हैं कि -

[☞ "... और उसके खाने की यह विधि है"]

यह प्रभु के अनुभवों को उनके चेलों और अनुयायियों के द्वारा सोख लेने या अपनाने को दर्शाता है जब वे अपने स्वामी के पदचिन्हों पर चलना चुनते हैं, जैसा कि हम

1 पतरस (1 Peter) 2:21 "और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठा कर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो।"

वचन में पढ़ते हैं-

जी हाँ! जो "आदर्श" प्रभु दे गए हैं यह खाया जाने वाला "मांस" है!

अब इस मांस को

[☞ "उन्हें अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात के साथ खाना था"]

चिन्ह में यह ये दर्शाता है कि स्वामी के चेलों या अनुयायियों के लिये जो उनके "आदर्श" के पीछे चलने की खोज में हैं, इस "अखमीरी रोटी" और "कड़वे सागपात" को खाना अनिवार्य है और उन्हें इसकी आवश्यकता भी है।

ये चिन्ह दर्शाते हैं कि -

☞ "अखमीरी रोटी" ➔ सत्य के शुद्ध वचन को दर्शाती है!

☞ "कड़वे सागपात" ➔ यह अंधकार की दुनिया में "ज्योति" में चलने वालों पर आनेवाली परीक्षाओं और क्लेशों को दर्शाता है, जैसा कि हम

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

2 तीमुथियुस (2 Timothy) 3:12 "पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे।"

वचन में पढ़ते हैं -

> जी हाँ! यह उन सभी लोगों को मिलने वाली सारी सहायता और प्रेरणा को दर्शाता है जो " प्रकाशितवाक्य (Revelation) 14:4 "... जहां कहीं मेम्ना जाता है, वे उसके पीछे हो लेते हैं ...।"

अब इस तथ्य को देखते हैं कि "मांस" को कच्चा या जल में पकाकर

➡ नहीं खाना है।

यह दर्शाता है कि आग में भूंजने की विधि ही सबसे अच्छे तरीके से स्वामी यानि "मनुष्य के पुत्र यीशु" की पीड़ाओं को दर्शा सकता है!

☞ यह ऐसा क्यों है ?

किसी भी भोजन को पकाने के लिए आग का इस्तेमाल किया जाता है और यहाँ आग क्लेशों को दर्शाता है। लेकिन भोजन पकाने के विभिन्न तरीकों में <u>आग की गर्मी</u> अलग अलग होती है।

जल में पकाने की तुलना में आग में भूंजने के लिए

➡ दोगुने अधिक ताप की जरुरत होती है,

जो कि हमारे स्वामी के द्वारा सहे गए पीड़ाओं के <u>स्तर</u> को दर्शाता है -

क्योंकि वे <u>परिपूर्ण मनुष्य</u> थे!

अब इस आज्ञा को देखते हैं जो दी गई थी -

[☞ "...और उसमें से कुछ भी सबेरे तक न रहने देना..."]

यह दर्शाता है कि हमारे प्रभु के बलिदान में सहभागी होने और "मसीह के साथ" मरने का यह ऊपरी बुलावा केवल इस सुसमाचार युग की "रात्रि" अवधि तक ही सीमित है।

जी हाँ! मसीह के दुखों में सहभागी होने और उनकी देह का अंग बनने का यह सुनहरा अवसर हजार वर्ष के युग की भोर आने तक समाप्त हो जायेगा -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

➡ "सुबह में"

जब मसीह की पूरी देह "धर्म का सूर्य और उसकी किरणों" के रूप में तैयार हो जाएगी और महिमा में होगी।

मलाकी (Malachi) 4:2 "... धर्म का सूर्य उदय होगा, और उसकी किरणों के द्वारा तुम चंगे हो जाओगे...।"

जी हाँ! इस दिव्य न्योता का अवसर फिर कभी भी नहीं मिलेगा!

जी हाँ! अकथनीय रूप से महिमामय दिव्य स्वभाव के लिए स्वर्गीय उद्धार, यानि

➡ "ऐसे बड़े उद्धार" इब्रानियों (Hebrews) 2:3

का भाग होने का यह न्योता और विशेषाधिकार सुसमाचार युग के अंत और दूसरे संसार के ☞ "रात" की अवधि के समाप्त होने के साथ बंद हो जायेगा।

तीसरे संसार के हजार वर्ष की "सुबह" में एक और उद्धार प्रारम्भ होगा जो कि पूरी मानवजाति के लिए खुलेगा-

➡ सांसारिक उद्धार।

इस प्रकार इस "भूने हुए मांस" को जो मसीही उद्धार को दर्शाता है अवश्य "जला" देना है। "जला देना" इस महिमामय उद्धार के द्वार का हमेशा के लिये बंद हो जाने को दर्शाता है!!

इसके बाद हम आगे पढ़ते हैं -

[☞ "...और उसके खाने की यह विधि है; कि कमर बान्धे, पांव में जूती पहिने, और हाथ में लाठी लिए हुए उसे फुर्ती से खाना"]

जूते और लाठी के साथ यह पूरी तरह से तैयार स्थिति -

➡ यात्री या परदेशी को दर्शाता है

क्योंकि मसीह के देह के सभी सदस्य सचमुच में पृथ्वी के वनवास में यात्री हैं और उनका असली घर

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

"स्वर्गीय कनान" है।

इसीलिए

यूहन्ना (John) 14:3 “और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं...।”

वचन में प्रभु ने कहा था -

जी हां! कलीसिया से अभी के समय में एक जीवन और उद्धार का वादा किया गया है जो कि "सांसारिक" नहीं बल्कि "स्वर्गीय" है।

और इस प्रकार अभी के “जीवन” और अनुभवों को स्वर्ग की ओर एक यात्रा माना जा सकता है!

जी हाँ! वही वो "घर" है जिसकी ओर स्वामी के चेले यात्रा कर रहे हैं!

वस्त्र और जूते वह दर्शाते हैं जिसके बारे में--

इफिसियों (Ephesians) 6:13 “इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में साम्हना कर सको...।” वचन में पढ़ते हैं -

जी हाँ! इस वस्त्र या "परमेश्वर के हथियार" का विवरण इफिसियों (Ephesians) 6:14-17 वचनों में मिलेगा।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

स्वामी के प्रत्येक और हर चेले और अनुयायी को इस वस्त्र और जूतों को अवश्य पहनना होगा!

लाठी यहाँ पर पवित्र आत्मा को दर्शाता है जिसे कहीं और

"तेल" के रूप में दर्शाया गया है।

मत्ती (Matthew) 25:4 "...अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया।"

हम "लाठी" को पवित्र आत्मा का चिन्ह

भजन संहिता (Psalms) 23:4 "...क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है॥" वचन से समझते हैं ->

यह एक भविष्यद्वाणी का भजन संहिता है जो कलीसिया के अनुभवों और "तेरे सोंटे" और "तेरी लाठी" के प्रावधानों को बताता है। "तेरे सोंटे" परमेश्वर के वचन को और "तेरी लाठी" परमेश्वर की पवित्र आत्मा यानि

-"सहायक" को दर्शाते हैं।

अंततः हम पढ़ते हैं कि -

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

["...उसे फुर्ती से खाना; वह तो यहोवा का पर्व होगा"]

यह वचन वह दर्शाता है जिसका प्रतिनिधित्व हमें
फिलिप्पियों (Philippians) 2:12 "... डरते और कांपते हुए अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ।" वचन में मिलता है -
जी हाँ! प्रतिदिन ... ना,...प्रत्येक घंटा ...और हाँ, धीरे-धीरे यह स्पष्ट हो जायेगा कि ... इस स्वर्गीय बुलाहट और मसीह के चेले के

समर्पित जीवन में प्रत्येक क्षण अनमोल है।

क्योंकि आइये, प्रेरित पौलूस
इब्रानियों (Hebrews) 4:1 "इसलिये जब कि उसके विश्राम में प्रवेश करने की प्रतिज्ञा अब तक है, तो हमें डरना चाहिए; ऐसा ने हो, कि तुम में से कोई जन उस से रहित जान पड़े।" वचन में जो सिखाते हैं हम उसे पढ़ें -

जी हाँ! "फुर्ती" इस "डर" को दर्शाती है!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

अहा! इस प्रकार से हमने देखा कि

"फसह"

हमारे लिए <u>बहुत महत्वपूर्ण चीज</u> का प्रतीक है!

जी हाँ! यहूदियों को "विधि" (व्यवस्था) दी गई थी, मानने के लिए - छाया में...
लेकिन मसीहियों को आज कुछ ज्यादा बड़ी चीज के लिए बुलावा दिया गया है जिसके बारे में हम

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 5:8 "<u>इसलिये</u> आओ हम उत्सव में आनन्द मनावें...॥"

वचन में पढ़ते हैं -

जी हाँ! हम मसीहियों को "असलियत" (ANTITYPE) मनाने के लिये बुलावा दिया गया है!

आइए अब देखते हैं कि कैसे, जैसा कि हम

लूका (Luke) 22:14-19 "जब घड़ी पहुंची, तो वह प्रेरितों के साथ भोजन करने बैठा। और उस ने उन से कहा; मुझे बड़ी लालसा थी, कि दुख-भोगने से पहिले यह फसह तुम्हारे साथ खाऊं। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊंगा। तब उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और कहा, इस को लो और आपस में बांट लो। क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक परमेश्वर का राज्य न आए तब तक मैं दाख रस अब से कभी न पीऊंगा। फिर उस ने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उन को यह कहते हुए दी, कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये दी जाती है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।" वचनों में पढ़ते हैं -
जी हां! यहाँ हम देखते हैं कि प्रभु ने अपनी मृत्यु के <u>पहले की रात</u> में फसह में हिस्सा लिया।

इसलिए इसे

"अंतिम भोज" कहा जाता है।

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

वह असलियत (ANTITYPICAL) में "परमेश्वर का मेमना" बन गये।
उस "अंतिम भोज" में उन्होंने

➡ "रोटी" और "दाखमधु" के

नए चिन्हों की स्थापना उनकी अपनी देह और लहू का प्रतीक बनाने के लिए की। इस प्रकार से उनका "देह" और "लहू" पूरी मानवजाति के छुड़ौती के बलिदान के रूप में दिए गए उनके बलिदान की मौत को दर्शाता है।

मरकुस (Mark) 10:45 "...और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे॥"
जी हाँ! "रोटी" और "दाखमधु" के इन चिन्हों का प्राथमिक मतलब यही है।
इसे समझने के बाद, हम कुछ और भी देखते हैं -
आइये
लूका (Luke) 22:17 और 19 वचन देखें -

☞ "तब उस ने कटोरा लेकर धन्यवाद किया, और कहा, इस को लो और आपस में बांट लो।"

☞ "फिर उस ने रोटी ली, और धन्यवाद करके तोड़ी, और उनको यह कहते हुए दी, कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये दी जाती है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।"
जी हाँ ! यहाँ हम देखते हैं कि प्रभु अपने चेलों को ये न्यौता देते हैं -

➡ "रोटी" को खाने का

➡ ...और "कटोरे" से ... पीने का

इसी तरह से इसका उल्लेख प्रेरित पौलुस ने

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 10:16 “वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं?” वचन में किया है -

इसका क्या मतलब है?

यह "कलीसिया की श्रेणी" के लोगों को उनके दुखों में सहभागी होने के लिए मिले न्यौते को दर्शाता है ... हाँ यहाँ तक की मृत्यु तक - उनके पीछे जाने को दर्शाता है!

प्रभु के दुखों में सहभागी होने के इस विशेषाधिकार का उल्लेख

कुलुस्सियों (Colossians) 1:24 “अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं, जो तुम्हारे लिये उठाता हूं, और मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिये, अर्थात कलीसिया के लिये, अपने शरीर में पूरी किए देता हूं।” वचन में किया गया है -

जी हाँ! इस वचन में प्रेरित पौलुस ने सहभागी होने के विशेषाधिकार का वर्णन

➡ "मसीह के क्लेशों" के द्वारा किया है और

रोमियो (Romans) 6:3 “...कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया” वचन में इसी बात का वर्णन "मसीह की मृत्यु" का बपतिस्मा के रूप में किया है -

जी हाँ! प्रभु के पदचिन्हों-बलिदान की मौत पर चलने का महान विशेषाधिकार!

यह “मसीह की देह के सहभागिता” है जिसका उल्लेख 1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 10:16 वचन में किया गया है।

➡ संसार और केवल नाममात्र के ईसाईयों के लिए यह एक रहस्य है!

इसी प्रकार हम

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 10:17 “इसलिये, कि एक ही रोटी है सो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं: क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं।”

वचन में पढ़ते हैं कि -

जी हाँ! यह "मसीह की देह" की एकता का एक चित्र है, जो अनेक अंग होने के बावजूद एकता में रहते हैं, जिसका विवरण

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इफिसियों (Ephesians) 4:4 “एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।” वचन में दिया गया है।

यह वह सामान्य संघ या

सहभागिता है जिसे हम मसीह के साथ बांटते हैं "एक बपतिस्मा" या पानी में डुबाना (यूनानी में इसे बाप्टिसो कहते हैं),

जैसा कि

इफिसियों (Ephesians) 4:5 “एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा।”

वचन में पाते हैं -

यह एक बपतिस्मा केवल पानी में डूबना नहीं, जो कि सिर्फ एक चिन्ह है, बल्कि इसका बहुत गहरा अर्थ है जिसका वर्णन खुद हमारे प्रभु ने

मरकुस (Mark) 10:38-39 “यीशु ने उन से कहा, तुम नहीं जानते, कि क्या मांगते हो? जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या पी सकते हो? और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूं, क्या ले सकते हो? उन्होंने उस से कहा, हम से हो सकता है: यीशु ने उन से कहा: जो कटोरा मैं पीने पर हूं, तुम पीओगे; और जो बपतिस्मा मैं लेने पर हूं, उसे लोगे।” वचनों में किया है -

जी हाँ! स्वामी के सभी चेलों के सामने प्रभु की मृत्यु के उस "एक बपतिस्मा" की एकता के अन्दर प्रवेश करने के विशेषाधिकार को अब प्रस्तुत किया गया है।

इसीलिए जब कभी भी स्मरण के दिन का अनुसरण किया जाता है,

“एक रोटी” ... और “एक कटोरे" के चिन्हों का प्रयोग किया जाता है।

अब हम देखेंगे कि जो इस स्मरण के दिन में हिस्सा लेते हैं, उन्हें किन किन शर्तों की पूर्ती करनी चाहिए?

हम इसके उत्तर को

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 11:28, 29 "इसलिये मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए। क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है।" वचनों में पढ़ते हैं -

यह वचन हमें बताता है कि हर बार जब कोई इन पवित्र चिन्हों में हिस्सा ले,

➡ उसे अपने नजरिये और हृदय की अवस्था को अपने आप से जाँचना है - मसीह के दुखों में भागीदार होने की उसकी अपनी वाचा को याद रखते हुए और उस वाचा की कितनी विश्वसनीयता के साथ निभाया है यह जाँचते हुए।

कृपया ध्यान दें - केवल समर्पित और 'वाचा बांधे' हुए देह के सदस्यों को ही इसमें हिस्सा लेना है।

प्रत्येक को इस मामले में अपना न्याय खुद करना है!!

☞ जी हाँ!! "...मनुष्य अपने आपको जाँच ले..." !

अब हम इस स्मरण के दिन का अनुसरण कितनी बार या कब-कब किया जाना चाहिए, इसे देखते हैं -

हम इसका उत्तर

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 11:26 "क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।" वचन में पढ़ते हैं -

यह "जब कभी" शब्द का मतलब आमतौर पर विभिन्न चर्चों के द्वारा ऐसा समझा गया है -

➡ प्रतिदिन, या दिन में कई बार, जैसा कि रोमन कैथोलिक मानते हैं,

➡ महीने में एक बार या हफ्ते में एक बार, जैसा कि प्रोटोस्टेंट मानते हैं।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इनके द्वारा कभी दोनों चिन्हों का प्रयोग किया जाता है या कभी या ज्यादातर (रोमन कैथोलिक्स में) केवल रोटी का प्रयोग किया जाता है, वो भी कोई रोटी नहीं बल्कि मात्र एक बिस्कुट!!

इसके अलावा यह पवित्र अनुसरण

"एक रात्रि भोज"

होना चाहिए, और इसका पालन शाम के बाद या 6 बजे के बाद रात्रि में होना चाहिए।

लेकिन व्यापक रूप से कैथोलिक चर्चों में यह देखा जाता है कि इसका अनुसरण दिन में अनेक बार होता है - दोनों समय, सुबह भी और शाम में भी।

प्रोटेस्टैंट चर्चों में इसका अनुसरण कुछ जगह सुबह होता है, कुछ जगह दोपहर को और कुछ जगह शाम को।

इस प्रकार सभी चर्चों में "प्रभु के रात्रि भोज" को "सुबह का नाश्ता" या "दोपहर का भोजन" बना दिया गया है।

क्या "प्रभु का रात्रि भोज" शब्द स्पष्ट नहीं है?

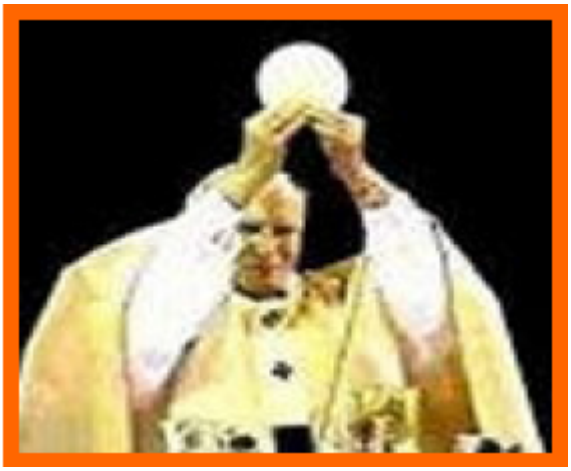

सच में कैसे सत्य या "...अति पवित्र विश्वास" (यहूदा (Jude) 1:20)

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

को भ्रष्ट कर दिया गया है और कैसे नाममात्र के ईसाईयों की दृष्टि से यह ओझल हो गया है

मत्ती (Matthew) 13:33 "उस ने एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया; कि स्वर्ग का राज्य खमीर के समान है जिस को किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते होते वह सब खमीर हो गया॥"

तो फिर इस वचन "जब कभी तुम यह खाते हो" का असली अर्थ <u>क्या</u> है??

यह देखते हुए कि यह "स्मरण का दिन" यहूदियों के फसह के छाया की असलियत है, जो कि एक वार्षिक उत्सव है, हम यह समझते हैं कि इस पवित्र अनुसरण की सही नियमितता

➡ वार्षिक या वर्ष में एक बार ही होनी चाहिए!

दो तथ्य इसकी पुष्टि करते हैं -

तथ्य #1

जब हम 1 कुरिन्थियों (Corinthians) 11:25, 26 और इब्रानियों (Hebrews) 9:25 वचनों की तुलना करते हैं, तब हम यह गौर कर सकते हैं कि "जब कभी" शब्द को "हर साल" के रूप में दिया गया है, जैसा कि हम

इब्रानियों (Hebrews) 9:25 "यह नहीं कि वह अपने आप को बार बार चढ़ाए, जैसा कि महायाजक <u>प्रति वर्ष</u> दूसरे का लोहू लिये पवित्रस्थान में प्रवेश किया करता है।"

वचन में पढ़ते हैं -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

यहाँ महायाजक के द्वारा किये गए वार्षिक प्रायश्चित के दिन की विधि का उल्लेख "बार-बार" के रूप में किया गया है !!

तो उसी प्रकार यहाँ पर भी "जब कभी" शब्द एक वार्षिक अनुसरण को दर्शाता है!! इसकी पुष्टि दूसरे तथ्य में और ज्यादा अच्छे से होती है -

तथ्य #2

इसे हम
लूका (Luke) 22:19 "...मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।" वचन में पढ़ते हैं -

जी हां! यह स्मरण का दिन हमारे प्रभु की मृत्यु की एक स्मृति है और स्वाभाविक रूप से इस अनुसरण को वर्ष में एक बार ही करना चाहिए,

विशेषतः उसी दिन पर!

जिस दिन पहली बार प्रभु ने खुद इस स्मरण के दिन की स्थापना की थी!! आखिरकार हम अपने रिश्तेदार की मृत्यु को साल में कितनी बार स्मरण करते हैं? क्या हम हर महीने? हर हफ्ते? या हर दिन करते हैं?

बिल्कुल नहीं!

जरा सोचिए अगर भारत में महात्मा गाँधी की मृत्यु को हर महीने मनाया जाये !

वह बिलकुल उपहास के योग्य होगा!!!

इस प्रकार हम देखते है की इस स्मरण के दिन का अनुसरण करने की सही नियमितता वार्षिक होगी, जिसे उसी दिन करना होगा जब हमारे प्रभु ने खुद 33 ई वी में किया था - जिस वर्ष में उनकी मृत्यु हुई थी!

हम फसह की छाया के द्वारा यह देखते हैं कि वह दिन अबीब (निसान) महीने का "चौदहवाँ दिन" था!
निर्गमन (Exodus) 12:6 "और इस महीने के चौदहवें दिन तक उसे रख छोड़ना, और उस दिन गोधूलि के समय इस्राएल की सारी मण्डली के लोग उसे बलि करें।"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

हम यह भी पढ़ते हैं की छाया में फसह के मेमने को संध्याः के समय में मारा जाता है!

इसके असलियत (antitype) की पूर्ति तब हुई जब "परमेश्वर के मेमने" के रुप में यीशु क्रूस पर शाम के 3 बजे या नौवें घण्टे में मरे।

परन्तु उन्होंने उस “स्मरण” के दिन की स्थापना

उसके पिछली रात में की थी या अबीब (निसान) 14 वे दिन के आरम्भ में जो की अबीब (निसान) 13 वे दिन के शाम 6 बजे आरम्भ होता है!

इस प्रकार हर साल स्मरण के दिन के दिनांक (तारीख) को जानने के लिए हम अबीब (निसान) महीने के 13 वें दिन को देखते हैं जो कि उसी दिन के संध्या के 6 बजे के बाद हमें 14 वें दिन के आरम्भ में ले आयेगा - जो कि प्रभु की मृत्यु की सुबह से

पहले वाली रात थी।

यह वही पल होगा जब प्रभु ने पहली बार इस “स्मरण” के दिन को स्थापित किया था और हर साल उसी दिन उसी समय इसका अनुसरण करने से हम 33 ई वी के वही प्रभु के स्मरण के दिन की सालगिरह को मनायेंगे।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

आनेवाले वर्षों में "स्मरण" के दिन या अबीब (निसान) 13 के दिनांक (तारीख) निम्लिखित सूचि में दिये गए हैं -

- 2013 मार्च 24 रविवार
- 2014 अप्रैल 13 रविवार
- 2015 अप्रैल 2 गुरुवार
- 2016 अप्रैल 21 गुरुवार
- 2017 अप्रैल 9 रविवार
- 2018 मार्च 2 9 गुरुवार
- 201 9 अप्रैल 18 गुरुवार
- 2020 अप्रैल 7 मंगलवार
- 2021 मार्च 26 शुक्रवार
- 2022 अप्रैल 14 गुरुवार
- 2023 अप्रैल 4 मंगलवार
- 2024 अप्रैल 21 रविवार
- 2025 अप्रैल 11 शुक्रवार
- 2026 मार्च 31 मंगलवार
- 2027 अप्रैल 20 मंगलवार
- 2028 अप्रैल 9 रविवार
- 2029 मार्च 29 गुरुवार
- 2030 अप्रैल 16 मंगलवार

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

आरम्भ की कलीसिया में यह प्रथा थी कि इन चिन्हों के अनुसरण के साथ वे पूरी रात्रि का भोज भी करते थे, लेकिन बाद में इसका दुरूपयोग होने के कारण इस प्रथा को छोड़ दिया गया , जैसा कि हम

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 11:20-22 "सो तुम जो एक जगह में इकट्ठे होते हो तो यह प्रभु भोज खाने के लिये नहीं। क्योंकि खाने के समय एक दूसरे से पहिले अपना भोज खा लेता है, सो कोई तो भूखा रहता है, और कोई मतवाला हो जाता है। क्या खाने पीने के लिये तुम्हारे घर नहीं या परमेश्वर की कलीसिया को तुच्छ जानते हो, और जिन के पास नहीं है उन्हें लज्ज़ित करते हो मैं तुम से क्या कहूं? क्या इस बात में तुम्हारी प्रशंसा करूं? मैं प्रशंसा नहीं करता।" वचनों में पढ़ते हैं -

अंत में इस "स्मरण" के दिन में भाग लेने वाले <u>सभी</u> लोगों को एक <u>कड़ी</u> चेतावनी दी गयी है, जिसके बारे में हम

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 10:21,22 "तुम प्रभु के कटोरे, और दुष्टात्माओं के कटोरे दोनों में से नहीं पी सकते! तुम प्रभु की मेज और दुष्टात्माओं की मेज दोनों के साझी नहीं हो सकते। क्या हम प्रभु को रिस दिलाते हैं? क्या हम उस से शक्तिमान हैं?" वचनों में पढ़ते हैं -

इसका मतलब क्या है ?

यह पवित्र आत्मा जिसके द्वारा हम समर्पित किये जाते हैं और "संसार की आत्मा" के बीच <u>मिलावट</u> को दर्शाता है, जिसके बारे में हमें प्रेरित याकूब,

याकूब (James) 3:10-11 "एक ही मुंह से धन्यवाद और श्राप दोनों निकलते हैं। हे मेरे भाइयों, ऐसा नहीं होना चाहिए।"

वचनों में सिखाते हैं -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

जी हाँ! जिन लोगों के पास पवित्र आत्मा है, उन्हें अवश्य "संसार की आत्मा" के "कामों" का विरोध करने का और उनपर जय पाने का हर संभव प्रयास करना होगा।
इस "संसार की आत्मा" के कामों की सूची का विस्तृत विवरण हम
गलातियों (Galatians) 5:19-21 "शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन। मूर्ति पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म। डाह, मतवालापन, लीलाक्रीड़ा, और इन के जैसे और और काम हैं, इन के विषय में मैं तुम को पहिले से कह देता हूं जैसा पहिले कह भी चुका हूं, कि ऐसे ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे।" वचनों में पाते हैं -

जी हाँ! "स्मरण के दिन" में हिस्सा लेनेवालों को इसका गंभीर ध्यान रखना चाहिए!!!

अब आरम्भिक कलीसिया के "रोटी तोड़ने" के चलन का एक मामला है जिसका स्पष्टीकरण किया जाना चाहिए,
जैसा कि हम
प्रेरितों के काम (Acts) 2:46 "और वे प्रति दिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे।"
वचन में पढ़ते हैं -

हम इसका उल्लेखन फिर से

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

प्रेरितों के काम (Acts) 20:7 “सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें की, और आधी रात तक बातें करता रहा।” वचन में पाते हैं -

यहाँ "रोटी तोड़ने" का मतलब क्या है?

क्या ये फसह था जिसका वे अनुसरण कर रहे थे?

क्या ये "प्रभु के स्मरण" का दिन था?

जी हाँ! नाममात्र के चर्चों के द्वारा "प्रभु के रात्रि भोज" में दैनिक या साप्ताहिक तौर पर हिस्सा लेने के आधार के रूप में इन्हीं वचनों को प्रस्तुत किया जाता है!!

तो इसका उत्तर क्या है?

इसका उत्तर पाने के लिये आइये हम
लूका (Luke) 24:30 “जब वह उन के साथ भोजन करने बैठा, तो उस ने रोटी लेकर धन्यवाद किया, और उसे तोड़कर उन को देने लगा।” वचन की ओर पलटें -
जी हाँ! यहाँ यीशु हैं जो मृतकों में से अपने पुनरुत्थान के बाद और पिन्तेकुस्त से पहले "रोटी तोड़ते" हैं।
कोई भी आसानी से सहमत होगा की यह निश्चित रूप से फसह तो बिलकुल भी नहीं था!

यह तो एक रात्रि भोजन था!

तो फिर "रोटी तोड़ने" का चलन क्यों था?

यह भोजन करते समय परमेश्वर को “धन्यवाद” करने का यह एक यहूदी चलन था। मेज पर मौजूद सदस्यों में से कोई एक रोटी लेकर परमेश्वर से धन्यवाद की प्रार्थना करने के बाद रोटी को मेज पर मौजूद सदस्यों की संख्या के अनुसार तोड़ता है और प्रत्येक सदस्य को एक टुकड़ा देकर इस प्रकार से भोजन आरम्भ करता है।
यह भी वास्तव में वही है जो हमने पढ़ा कि यीशु ने किया, जैसा कि हम देखते हैं -
“तो उस ने रोटी लेकर धन्यवाद किया, और उसे तोड़कर उन को देने लगा”

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

अब यही यहूदी चलन आरम्भिक कलीसिया में भी था, जिसका अभिप्राय है - एक साथ भोजन बाँटना यह भाईचारा और प्रेम की बात थी!

पर इस "रोटी तोड़ने" का प्रभु के "रात्रि भोज" के अनुसरण से कोई सम्बन्ध नहीं था।

अंततः, हमारे पास एक सवाल है जिसे संदेह के रूप में प्रस्तुत किया गया है - इसे हम
1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 11:26 "क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।"
वचन में पाते हैं -

सवाल यह है कि जब वचन कहते हैं कि "... प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो",

तो फिर मसीह की देह के सदस्य, उनके आने के बाद भी फसह का अनुसरण क्यों करते है?

जी हाँ! क्योंकि प्रभु 1874 में वापस आ गए हैं और अब हम उनकी उपस्थिति यानि "परोसिया" के समय में रहते हैं,

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

इसलिये यह सोचा जाता है कि फसह के अनुसरण को अवश्य रोक देना चाहिए क्योंकि प्रेरित पौलुस ने इस वचन में कहा है कि "जब तक वह न आए" तब तक इसका अनुसरण करो।

इस प्रश्न का उत्तर क्या है?

➡ इसका उत्तर हमारे प्रभु के वचनों में मिलता है -

लूका (Luke) 22:16 "क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊंगा।"

जी हाँ! खुद प्रभु से इसका उत्तर यहाँ मिलता है!
"रोटी में हिस्सा लेना",

➡ परमेश्वर के राज्य में या राज्य के अंदर ही समाप्त या पूरा होगा, और न कि राज्य आने से पहले या प्रभु के दूसरे आगमन से पहले होगा!!

ये सब जानते हैं कि मसीह की देह का एक हिस्सा जिन्हें "... हम जो जीवित और बचे रहेंगे"

1 थिस्सलुनीकियों (1 Thessolonians) 4:17 "तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।"

वचन में कहकर सम्बोधित किया गया है, वे 1874 में प्रभु के लौट आने .... और राज्य के अदृश्य अवस्था के आरम्भ होने के बाद भी शरीर में रहेंगे।

जब तक वे सभी महिमा में न हों और जब तक वे सब
☞ "शरीर" में हों,
वे "रोटी" में भाग लेना जारी रखेंगे और

➡ फसह की छाया की असलियत का अनुसरण अवश्य करेंगे।

अब 1 कुरुंथियों (1 Corinthians) 11:26 वचन में प्रेरित पौलुस के शब्दों का महत्त्व क्या है ?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

1 कुरिन्थियों (1 Corinthians) 11:26 “क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।”

यहाँ पर "जब तक वह न आए" वचन को आमतौर पर दूसरे आगमन की 1874 की तारीख को दर्शाने के लिए लिया जाता है।

लेकिन जैसा कि प्रेरित पतरस हमें
2 पतरस (2 Peter) 3:16 “वैसे ही उस ने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है जिन में कितनी बातें ऐसी है, जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्र शास्त्र की और बातों की नाईं खींच तान कर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं।”
वचन में बताते हैं, हमें प्रेरित पौलुस के लेखों से सावधान रहना चाहिए।
जी हाँ! जब हम प्रेरित पौलुस के इन वचनों का तालमेल प्रभु यीशु के वचनों के साथ करते हैं तो हमें यह मिलता है -

➡ ”...प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो”

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

"... जब तक वह परमेश्वर के राज्य में पूरा न हो तब तक मैं उसे कभी न खाऊंगा"

संयुक्त विचार है – "जब तक वह न आए.... परमेश्वर के राज्य में"

जी हाँ! यह प्रभु के "आगमन" के उस चरण के सन्दर्भ में कहा गया है जिसके बारे में हम

मत्ती (Matthew) 25:31 "जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्ग दूत उसके साथ आएंगे तो वह अपनी महिमा के सिहांसन पर विराजमान होगा।"

वचन में पढ़ते हैं -

यह इस्राएल में महिमा में पहुंची सम्पूर्ण कलीसिया के साथ

आँखों देखे राज्य की अवस्था से सम्बंधित प्रभु के "आगमन" को सम्बोधित करता है।

जी हाँ! "सब स्वर्ग दूत उसके साथ आएंगे।"

हाँ! क्या यह बहुत स्पष्ट नहीं है?

छाया के फसह की असलियत का अनुसरण करना तब तक चलता रहेगा जब तक की कलीसिया

"शरीर में है"

और इस्राएल में राज्य के आँखों देखे चरण की स्थापना होने के बिलकुल पहले तक।

तब तक – "इसलिए आओ हम उत्सव में आनन्द मनावें"

आमीन

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail:
thekingdomgospel2874@gmail.com
E-mail: thekingdom1_6@yahoo.com